दुविधा में पड़ी छात्रा की कलम से

संविदा एस. वेंकटेश

कल मेरे एक जूनियर ने मुझसे फोन पर कहा," संविदा, कल मेरी भौतिकशास्त्र की परीक्षा है और मुझे उसमें एक बात समझ में नहीं आ रही है। क्या तुम मेरी मदद करोगी?" मुझे उसकी मदद करने में बड़ी खुशी हुई। मैंने उसके साथ उस प्रश्न पर कुछ देर तक चर्चा की। जब हम एक ऐसी अवधारणा पर आए जिसे अभी उसने सीखा नहीं था तो मैं उसे उसके बारे में समझाने लगी। लेकिन उसने मुझे बीच में ही यह कहकर रोक दिया कि, "कोई बात नहीं, हमें यह नहीं सिखाया गया है और यह प्रश्न परीक्षा में नहीं पूछा जाएगा।" उसने बड़े आत्मविश्वास के साथ मुझसे यह बात कही। मैंने फोन रख तो दिया लेकिन मेरा मन काफी बेचैन हो गया।

"यह परीक्षा के पोर्शन (परीक्षा के लिए तय पाठ्यवस्तु) में नहीं है," मेरे हिसाब से यह वाक्य हमारी शिक्षा प्रणाली के सबसे बड़े दोष का प्रतीक है– जो यह इंगित करता है हम सिर्फ परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए सीखते हैं।

मैं अपने कोर्स के अर्ध सत्र में हूँ। मेरे सहपाठी रात–रात भर भौतिकशास्त्र के सवाल और अकार्बनिक रसायनशास्त्र की पुस्तकें लेकर बैठे रहते हैं। और मैं? विज्ञान की छात्रा होने के बावजूद खान एकेडमी के विश्व इतिहास और मैक्रोइकोनॉमिक्स के वीडियो देख रही हूँ क्योंकि मुझे वे बहुत आकर्षक लगते हैं। लेकिन इसका सबसे भयानक पहलू यह है कि इसके लिए मैं खुद को यह बार–बार यह कहकर सजा दे रही हूँ कि,"संविदा, यह सब टेस्ट में नहीं आएगा, कृपया जाओ और जाकर कुछ उपयोगी काम करो।" शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि मैं कुछ सीखूँ, न कि यह कि मैं टेस्ट में उत्तीर्ण हो जाऊँ, लेकिन फिर भी मैं खुद को कल होने वाली किसी टेस्ट या अगले महीने होने वाली किसी परीक्षा के लिए सीखता हुआ पाती हूँ।

लेकिन यह रवैया जन्मा कहाँ से? हर दिन यह बात मेरी कक्षा और घरों में चारों ओर तेजी से बढ़ती हुई नजर आती है। इसकी शुरुआत बहुत छोटे से रूप में होती है जैसे कि जब कक्षा में किसी मित्र के सामने कोई अपनी शंका रखता है तो जवाब मिलता है,"चिन्ता मत करो, यह हमारे पोर्शन में नहीं है।" जब शिक्षक पूछते हैं कि क्या किसी टॉपिक के बारे और अधिक गहराई से बताया जाए तो जवाब मिलता है, "मैडम, पाठ्यपुस्तक में तो चार लाइनें ही दी गई हैं, ज्यादा गहराई में जाने से हम गड़बड़ा जाएँगे।" जब जीवविज्ञान की कोई छात्रा कहती है कि वह अपने "आनन्द" के लिए कम्प्यूटर प्रोग्राम लिखती है तो उसे बहुत जिज्ञासा और प्रतिकूल नजरों से देखा जाता है, जो बड़े अफसोस की बात है। लेकिन बात यहाँ रुकती नहीं और आगे बढ़ती है। शिक्षक विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यक्रम के बाहर के विषयों के बारे में बताने से मना करते हैं। माता–पिता आपको अपने चुने हुए विषयों से सम्बन्ध न रखने वाले विषय पढ़ने नहीं देते। अगर आप JEE के अभिलाषी हैं तो आपके कोचिंग इंस्टिट्यूट्स आपको जीवविज्ञान, अर्थशास्त्र, वास्तुकला और ऐसे ही अन्य बीसीयों विषयों की पुस्तकों से दूर रखते हैं। आपको इसका कारण यह बताया जाता है कि, "ऐसा हम इसलिए करते हैं ताकि आप अपना ध्यान केन्द्रित रख सकें।" ध्यान किस पर केन्द्रित करना है? परीक्षा में अच्छे प्रदर्शन पर।

तो मेरे लिए स्कूल का सबसे अक्षम वातावरण वह है जिसमें केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए पढ़ाई करने या सीखने पर जोर दिया जाए। मैं विद्यार्थियों (जिनमें मैं भी शामिल हूँ) को इस बात के लिए दोषी नहीं ठहरा सकती कि वे केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होने की खातिर पढ़ते या सीखते हैं। ये टेस्ट ही आपके कॉलेज, आपके पेशे और

अन्ततः आपकी जीवन–शैली को तय करते हैं। लेकिन ऐसा होना नहीं चाहिए। सोलह साल की उम्र में आप जो टेस्ट लिखते हैं, उन पर आपका भविष्य निर्भर नहीं होना चाहिए। किसी एक टेस्ट में प्राप्तांकों के आधार आपके कॉलेज को आपके बारे में निर्णय नहीं लेना चाहिए। आपके भावी मालिक को आपके कॉलेज के GPA के आधार पर आपको नौकरी नहीं देनी चाहिए।

मैं यह नहीं कह रही कि टेस्ट होने ही नहीं चाहिए। इसके बिना जो गड़बड़ी पैदा होगी उसके बारे में सोचकर ही डर लगता है। पर हमें परीक्षण के प्रभावी तरीकों को खोजना है। जरूरी नहीं कि "टेस्ट" परीक्षा भवन में तीन घण्टों के भीतर कड़ी निगरानी में संचालित किए जाएँ। हमें टेस्ट व परीक्षाओं, अधिगम से उनके सम्बन्ध और अन्ततः हम उन्हें कितना महत्त्व दें–इन सबके बारे में अपनी सोच को विस्तृत करना होगा।

अपनी शिक्षा प्रणाली की शिकायत करना आसान है लेकिन उसकी तारीफ करना बहुत कठिन है। जब भी मुझसे अपने स्कूल के वातावरण के बारे में पूछा जाता है तो भारतीय स्कूली पद्धति की उपज (या यूँ कहूँ कि शिकार) होने के नाते मैं लगभग हमेशा ही उसकी निन्दा करती हूँ। लेकिन क्या मेरे द्वारा की गई शिकायतों की वजह से ही प्रणाली का विकास नहीं होता? जब तक मुझ जैसे विद्यार्थी इन दुविधाओं के बारे में बताएँगे नहीं, तब तक सब कुछ आकर्षक ही लगेगा और कुछ भी बदलेगा नहीं। शिक्षा प्रणाली को किसी स्थिर तालाब जैसा नहीं अपितु बहती हुई नदी जैसा होना चाहिए ताकि वह अपने बनाए हुए समाज की माँगों को पूरा करने के लिए हमेशा विकासशील बनी रहे।

संविदा नेशनल पब्लिक स्कूल, बेंगलूरु की छात्रा हैं। उनसे samvida.venkatesh@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल